



हाल ही में दुर्लभ कैलिफोर्निया कॉन्डोर को अमेरिका के नॉर्थवेस्ट में उड़ते देखा गया और सौ साल में पहली बार ऐसा हुआ है। संरक्षित केन्द्र में जन्मे और पले-बढ़े दो कैलिफोर्निया कॉन्डोर को रैंडवुड नेशनल पार्क में छोड़ा गया। पसिफिक नॉर्थवेस्ट में इस विशाल वल्चर को पुनः बसाने के लिए चलाए गए प्रोजेक्ट के तहत यह कदम उठाया गया। बाद में दो कॉन्डोर और छोड़े गए। इस पार्क में आखिरी बार 1892 में कैलिफोर्निया कॉन्डोर देखा गया। कैलिफोर्निया कॉन्डोर नॉर्थ अमेरिका का सबसे बड़ा पक्षी है जिसके पंखों का फैलाव लगभग दस फीट (3 मीटर) है। कभी इस क्षेत्र में ये पक्षी बड़ी तादाद में नजर आते थे। पर 70 के दशक में ये लुप्त हो गए। विलुप्ति के मुख्य कारण थे, अवैध शिकार, शिकारियों द्वारा मारे गए जानवरों के शव खाने की वजह से होने वाली लैंड पॉइजनिंग और आवास विनाश। ये पक्षी 60 साल तक जिंदा रह सकते हैं और भोजन की तलाश में बहुत दूर-दूर तक जाते हैं, इसलिए इनकी रेंज अमेरिका के कई स्टेट्स तक फैली हो सकती है। इसको पुनः बसाने का प्रोजेक्ट क्षेत्रीय यूरोक आदिवासियों ने शुरू किया था। जो इसे पवित्र मानते हैं। उनके इस प्रोजेक्ट में फेंडरल एवं स्थानीय फिश एण्ड वाइल्डलाइफ एजेंसियां भी शामिल हैं। यूरोक आदिवासी कई वर्षों से अपने पूर्वजों की धरती पर इस पक्षी की वापसी का प्रयास करते रहे हैं। ट्राइबल चैयरमैन जोसफ एल-जेम्स ने एक बयान में कहा कि "अनगिनत पीढ़ियों से यूरोक आदिवासियों ने नैचुरल वर्ल्ड में संतुलन कायम रखने की पवित्र जिम्मेवारी ले रखी है। कॉन्डोर का पुनर्वास पृथ्वी को भावी पीढ़ियों के लिए बचाए रखने की हमारी सांस्कृतिक प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति है।" नेशनल पार्क में छोड़े गए चार कॉन्डोर में एक मादा व तीन नर हैं और इनकी उम्र 2 से 4 साल के बीच है। अस्सी के दशक के आरंभ में जंगल में मात्र 22 कॉन्डोर ही बचे थे, इन सभी को पकड़कर संरक्षित प्रजनन केन्द्र में ले लाया गया था। सबसे पहले 1992 में सर्दरन कैलिफोर्निया के लॉस पाडरस नेशनल फॉरेस्ट में जांट कॉन्डोर छोड़े गए जो अपनी रेंज का विस्तार कर रहे हैं। अब इनकी आबादी 500 हो गई है। दो साल पहले कैलिफोर्निया के सिएरा नेवाडा के सकोया नेशनल पार्क में कैलिफोर्निया कॉन्डोर देखे गए, 50 साल में ऐसा पहली बार हुआ था। हालांकि उसी वर्ष जंगल में लगी आग में एक दर्जन वयस्क कॉन्डोर व दो बच्चे मारे गए थे।

सिब्लल न तो पहले और न ही आखिरी "वकील-नेता" काँम्बीनेशन हैं

पर, स्थिति में एक फर्क जरूर आया है, पहले प्रारम्भ से "वकील-नेता" काँम्बीनेशन वाला व्यक्तित्व होता था, पर अब पहले सफल व प्रभावशाली वकील बनने के बाद, राजनीति में कूदा जाता है

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 24 मई। कपिल सिब्लल ऐसे पहले एवं सम्भवतः अन्तिम व्यक्ति नहीं, जिन्होंने "कानून" और "राजनीति" की दो दुनियाओं के साथ सफलतापूर्वक तथा साथ-साथ निर्वहन किया हो।

संसद के उच्च सदन (राज्य सभा) में अपने वर्तमान कार्यकाल की समाप्ति के अन्तिम महीनों में, सिब्लल ने बुधवार को समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव की मौजूदगी में साक्षरता के साथ सभा के लिये अपना नामांकन पत्र दाखिल कर दिया। ज्ञातव्य है कि समाजवादी पार्टी के नाम और चुनाव चिन्ह से सम्बन्धित में सिब्लल ने अखिलेश यादव की ओर से पैरवी की थी। इससे पहले सिब्लल अखिलेश के पिता मुलायम सिंह यादव के भी करीबी रहे बताये जाते हैं। विरोधी जी-23 के सदस्य, सिब्लल ने घोषणा कर दी कि उन्होंने शानदार अतीत वाली पार्टी (कांग्रेस) से इस्तीफा दे दिया है तथा वे राज्य सभा का चुनाव, समाजवादी पार्टी

- पहले वाले मॉडल में महात्मा गांधी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू और डॉ.बी.आर. अम्बेडकर थे।
- नये मॉडल में सिब्लल, सुब्रमण्यम स्वामी, अभिषेक मनु सिंघवी, आर.के. आनन्द हैं।
- सिब्लल तो साफ कहते सुने गये हैं कि, वे चारा घोटाला काण्ड में लालू यादव के वकील थे, और लालू के कारण उनकी लोकसभा में "एंट्री" हुई थी।

के समर्थन के साथ, निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में लड़ेंगे। देश की आजादी के समय से ही, राजनैतिक परिदृश्य पर वकील-राजनेताओं का दबदबा रहा है। चाहे वे महात्मा गांधी हों, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद हों, जवाहर लाल नेहरू हो या डॉ. बी.आर. अम्बेडकर हों। पिछले दो दशकों में, एक अलग प्रकार का वर्ग उभर कर आया है- ऐसे लोग, जिन्होंने अपनी जबरदस्त वकालत के कारण, राजनीति में प्रतिष्ठा अर्जित की। जैसा कि सिब्लल ने स्वयं स्वीकार किया है, वे संसद में अपने प्रवेश के लिये आरजेडी प्रमुख लालू प्रसाद के ऋणी एवं आभारी हैं, जिनकी

में शामिल हैं। पी चिदम्बरम तथा अभिषेक मनु सिंघवी। वस्तुतः, सिंघवी राज्यसभा के लिये ममता नर्जी की तृणमूल कांग्रेस के समर्थन से चुने गये थे। वरिष्ठ वकील आर.के. आनन्द एनडीए सरकार के शासनकाल के दौरान 2000 में राज्य सभा के लिये चुने गये थे तथा बाद में उन्होंने दो लोकसभा चुनाव भी लड़े। उन्होंने पहला चुनाव 2004 में कांग्रेस टिकट पर दक्षिण दिल्ली सीट से लड़ा था तथा दूसरी कोशिश उन्होंने 2014 में फरीदाबाद लोकसभा क्षेत्र से इंडियन नेशनल लोक दल के टिकट पर की थी।

लोग अपने व्यवसायों के दौरान बीच में भी अपना रास्ता बदल लेते हैं, जबकि कुछ लोगों में इतनी और ऐसी क्षमताएं तथा कौशल हुआ करता है कि वे कई क्षेत्रों में एक साथ बड़ी सहजता से काम करते रहते हैं। इसमें कुछ नुकसान भी नहीं है। नैतिक प्रश्न केवल तभी उठते हैं, जब राजनैतिक दल लोगों को राज्यसभा के नामांकन के अवसर के रूप में "रिटर्न गिफ्ट" देते दिखाई देते

सिब्लल का इतिहास

-रेणु मिश्र-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 25 मई। कपिल सिब्लल ने उत्तर प्रदेश से एक निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में राज्यसभा का नामांकन पत्र भरकर गांधी परिवार के मुंह पर एक करारा तमाचा जड़ा है। उत्तर प्रदेश के हाल ही सम्पन्न विधानसभा चुनावों में कांग्रेस प्रियंका गांधी की अगुवाई में सिर्फ दो सीटों ही जीत सकी थी। कपिल सिब्लल समाजवादी पार्टी के वोटों के सहारे राज्यसभा में प्रवेश करेंगे क्योंकि उनके नामांकन पत्र भरने के

इस बार सिब्लल इतिहास दोहरा रहे हैं, क्योंकि पिछली बार भी सपा की मदद से पहुंचे थे राज्यसभा, हालांकि, इस बार उनका ओहदा, निर्दलीय उम्मीदवार का होगा।

दौरान अखिलेश यादव मौजूद थे। सुप्रीम कोर्ट के सर्वाधिक कुशल वकीलों में से एक सिब्लल पिछली बार भी समाजवादी पार्टी की मदद से राज्यसभा सदस्य बने थे। हालांकि इस बार वे एक निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर राज्यसभा में होंगे क्योंकि वह किसी पार्टी से सम्बद्ध नहीं हैं। समाजवादी पार्टी से राज्यसभा के दो अन्य सदस्य बनने हैं, जिसकी घोषणा वह उचित समय पर करेंगे। (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एक-एक करके महारथी क्यों छोड़ रहे हैं पार्टी

राहुल की "फिलॉसफी" व भाषण में "वैस्टर्न लिबरल" सोच की प्रतिध्वनि तो सुनाई देती है, पर, धरातल पर जनता में यह "विश्वास" पैदा नहीं कर पा रही कि, इस "फिलॉसफी" में ही उसका भला निहित है

-अंजन राय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 25 मई। राहुल गांधी ने भारत को एक राष्ट्र की बजाय राज्यों का एक संघ बताया और इस आइडिया की विस्तृत व्याख्या की और इधर भारत में कांग्रेस जिसने उन्हें प्रमुखता दे रखी है अक्षम नेतृत्व की वजह से टूट रही है।

राहुल गांधी ने विदेश जाकर अप्रवासी भारतीयों से संवाद करना उचित समझा यद्यपि यहां कांग्रेस का जनाधार निरंतर सिकुड रहा है। वे वही बात कह रहे हैं जो पश्चिम हमेशा से भारत के बारे में कहता रहा है। इस तरह की बातें पाश्चात्य लोगों को अच्छी लग सकती हैं पर इससे पार्टी को अपनी दशा सुधारने में कोई मदद नहीं मिलेगी। इससे कांग्रेस पार्टी की ऐसी छवि कदापि नहीं बनेगी जिसे सरकार चलाने का मौका दिया जाए। उनके इंटरव्यू और प्रश्नोत्तर सत्र जब भी प्रेक्षास्पद नहीं रहे और कई बार जवाब देते समय उनकी जवान लड़खड़ाई। एक व्यक्ति के प्रति उनकी

नरसिम्हा राव जब प्र.मंत्री बने थे तो, उन्होंने अल्पमत वाली सरकार पूरे समय चलायी थी तथा पूरे समय नेहरू-गांधी परिवार को पार्टी के संगठन व सरकार से एकदम दूर रखा था। क्या राजनैतिक अस्तित्व के लिए पार्टी को नरसिम्हा राव अध्याय दोबारा दोहराने का समय आ गया है।

ब्रण्ण उभरकर आई जबकि इससे बड़े कई सवाल और मुद्दे थे। इंटरव्यू अकस्मात खत्म हो गया। क्योंकि वक्ता की बातों में तालमेल ही नहीं था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पार्टी कार्यकर्ताओं का उच्चतम नेतृत्व की चुनाव जीतने की क्षमताओं पर भरोसा टूट रहा है। राहुल गांधी के साक्षात्कार इस कहावत पर खरे उतरते हैं जब रोम जल रहा था तब नीरो बंसी बजा रहा था। यहां पर हालात हैं लोग कांग्रेस छोड़ रहे हैं क्योंकि पार्टी का जहाज डूब रहा है। गत कई वर्षों से कांग्रेस पार्टी के स्तम्भों में से एक रहे कपिल सिब्लल ने भी पार्टी छोड़ दी है और वे सपा की मदद से बतौर निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। यह

एकमात्र घटना नहीं है। इससे पहले सुनील जाखड़ ने अपनी पीड़ा जताते हुए पार्टी छोड़ी थी वे जाटों के रसूखदार नेता हैं। अश्विनी कुमार ने भी नाराजगी में पार्टी छोड़ी क्योंकि पार्टी की सत्ता में वापसी की संभावना नहीं थी। इससे बहुत पहले युवा नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया ने पार्टी छोड़ दी थी और वे सीधे भाजपा में चले गए क्योंकि उन्हें लगता था कि कांग्रेस नेतृत्व जनमानस को उत्साहित नहीं कर सकता है और ना ही वोट ले सकता है। उनके मित्र सचिन पायलट राजस्थान में कई वर्षों से अशान्त हैं, और (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दर्दा को टिकट देगी आप

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 25 मई। कांग्रेस के पूर्व राज्यसभा सदस्य विजय दर्दा (72) आम आदमी पार्टी (आप) के टिकट पर पंजाब से पुनः राज्यसभा सदस्य बनने जा रहे हैं। पंजाब में 10 जून को राज्यसभा की दो सीटों के लिए द्विवार्षिक चुनाव हो रहे हैं।

विजय दर्दा कांग्रेस नेताओं के परिवार से हैं। उनके पिता जवाहर लाल दर्दा और छोटे भाई राजेन्द्र दर्दा (69) दोनों ही महाराष्ट्र की सरकारों में कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं। समझा जाता है कि विजय दर्दा की आप सुप्रीमो अरविन्द

- आप का इरादा, लोकमत की पीठ पर सवार होकर महाराष्ट्र में प्रवेश करे।

केजरीवाल के साथ एक डील हुई है, जिसके अन्तर्गत वह अगले चुनावों में आप के महाराष्ट्र में प्रवेश को तीव्र करने के लिए अपने लोकमत ग्रुप ऑफ न्यूजपेपर्स से मदद करेंगे। लोकमत महाराष्ट्र के कई स्थानों से प्रकाशित होने वाला सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला दैनिक अखबार है।

राज्यसभा चुनाव से पहले सामने आती जा रही है कांग्रेस विधायकों की नाराजगी

'मुख्यमंत्री अपने मंत्री के जेल जाने से डरते हैं इसलिए रीट की सी.बी.आई. जांच नहीं करा रहे'

जयपुर, 25 मई (का.प्र.)। राज्यसभा चुनाव ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहे हैं, वैसे वैसे कांग्रेस विधायकों की नाराजगी सामने आती जा रही है। पहले डूंगरपुर विधायक गणेश घोषरा ने मुख्यमंत्री को अपना इस्तीफा भेजा और प्रतापगढ़ विधायक रामलाल मीणा ने उनका समर्थन किया। इसके बाद घोषरा सीधे दिल्ली पहुंच गए तो रामलाल मीणा ने डूंगरपुर में कांग्रेस के बिखरने की बात कही। अब कांग्रेस के बेंगु विधायक राजेंद्र विधुड़ी ने तो

- कांग्रेस विधायक विधुड़ी ने सार्वजनिक मंच से यह भी कहा कि, "50 हजार से हारने वाले को राज्यमंत्री का दर्जा दे दिया, जीतने वाले को नीचे गिरा दिया।"

सार्वजनिक रूप से कह दिया है कि मुख्यमंत्री गहलोल अपने मंत्री के जेल जाने से डरते हैं, इसलिए रीट की सीबीआई जांच नहीं करा रहे हैं। चित्तौड़गढ़ के बेंगु से विधायक विधुड़ी अपने बयानों को लेकर पहले भी चर्चाओं में रहे हैं और अब उन्होंने

इस दौरान पारसोली थाना पुलिस के खिलाफ बोलते-बोलते विधुड़ी ने सीएम को भी धर लिया। उन्होंने कहा कि, थाने से डोडाचूरा चोरी हो गया। इसकी सीबीआई जांच होनी चाहिए थी। मुख्यमंत्री ही गृहमंत्री हैं, उन्हें सब को सस्पेंड करना चाहिए था। सबको भगाकर सीबीआई जांच करानी चाहिए थी। सीएम रीट मामले की जांच नहीं करवा सकते। कम से कम पारसोली थाने के मामले की तो जांच करवानी

चाहिए थी। विधुड़ी ने चित्तौड़ से कांग्रेस पार्टी के एक वरिष्ठ नेता का नाम लिए बिना कहा कि जो नेता दो बार 50 हजार वोटों से हारा है, उसको मुख्यमंत्री ने राज्यमंत्री का दर्जा दे दिया और जीतने वाले को नीचे गिरा दिया। हम विधायक जीतेंगे तभी तो आप मुख्यमंत्री बनोगे। हमें हमारा कार्यकर्ता ही जिताएंगे। जब कार्यकर्ता ही पार्टी छोड़ दी है और वे सपा की मदद से बतौर निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। यह

एक अनार सौ बीमार

-रेणु मिश्र-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 25 मई। अगले वर्ष राजस्थान विधानसभा चुनाव होने हैं, इसलिये विशुब्ध एवं उत्तेजित जाति-आधारित नेताओं ने अपना दमखम एवं तेवर दिखाने शुरू कर दिये हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से यह कहना शुरू कर दिया है कि पार्टी को अन्य जातियों को भी समायोजित करना चाहिये, केवल जाटों को ही नहीं, जैसा कि हो रहा है। उन्होंने कहा कि पी.सी.सी. अध्यक्ष जाट हैं, ए.आई.सी.सी. महासचिव हरीश

- जाट के खिलाफ वातावरण बना रहे हैं राजपूत, आदिवासी, मुस्लिम आदि, राज्यसभा टिकट के लिये।

चौधरी जो राजस्थान के बाडमेर क्षेत्र से हैं, जाट हैं तथा गहलोत सरकार के 4-5 मंत्री जाट हैं। उन्होंने कहा है कि इससे जातियों का प्रतिनिधित्व असंतुलित हो गया है। मुस्लिमों का कहना है कि वे राज्य की आबादी का 10 प्रतिशत हिस्सा हैं तथा उन्हें राज्यसभा की एक सीट मिलनी चाहिये। आदिवासी भी स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रहे हैं तथा अपनी उपेक्षा को लेकर मुखर होने लगे हैं। (शेष अंतिम पृष्ठ पर)